

# युवा-सर्वांगीण विकास कार्यक्रम

छः दिवसीय कार्यक्रम में विभिन्न प्रान्तों के युवाओं ने लिया भाग

सांस्कृतिक कार्यक्रमों द्वारा भी लोगों का किया गया मनोरंजन

ओ.आर.सी.-गुरुग्राम।

ओम शान्ति रिट्रीट सेंटर में भारत सरकार के युवा एवं खेल मंत्रालय के सौजन्य से युवाओं के सर्वांगीण विकास के लिए नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों के साथ-साथ सांस्कृतिक एवं खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन



कार्यक्रम के दौरान सुंदर सांस्कृतिक प्रस्तुति देकर सबका मनोरंजन करते विभिन्न प्रान्तों से आये युवा।

किया गया। छः दिवसीय इस राष्ट्रीय एकता शिविर में सौ एवं दो सौ मीटर की दौड़, हाई जम्प तथा लॉग जम्प के अलावा निबन्ध, भाषण, मोनो एक्टिंग एवं सोलो साँग जैसी प्रतियोगिताएँ प्रमुख रूप से कराई गईं। सभी ने सफाई के कार्यों में भी बड़े उमंग-उत्साह से भाग लिया। सांस्कृतिक कार्यक्रमों में सबने अपने-अपने प्रान्त के नृत्य, गीत एवं संगीत के द्वारा सभी

का मन मोह लिया। शिक्षाप्रद नाटकों का भी सुंदर मंचन किया गया। परशुराम एवं लक्ष्मण संवाद के द्वारा राजस्थान के युवाओं ने कला का बेजोड़ प्रदर्शन किया। ग्लोबल वार्मिंग, पर्सनैलिटी डेवलपमेंट, तनावमुक्त जीवन, सदा खुश कैसे रहें एवं नशामुक्त जीवन के बारे में भी अनेक प्रकार की जानकारी दी गई। 'समय सबसे बड़ी पूंजी है। जो एक-एक सेकण्ड

का सदुपयोग करता है, वही महान बनता है। वर्तमान समय हम जैसा करते हैं, वही हमारे भविष्य का आधार बनता है। आप सभी इतने सुंदर वातावरण में हैं, जितना चाहे इसका लाभ ले सकते हैं, ये आपके हाथ में है। यहाँ का

आध्यात्मिक परिवेश आपको परिवर्तन करने की शक्ति देता है। यही अवसर है जबकि आप जिस दिशा में चाहें उस दिशा में आगे बढ़ सकते हैं' - युवाओं को सम्बोधित करते हुए ओ.आर.सी. निदेशिका ब्र.कु. आशा। विभिन्न प्रान्तों से आये हुए कई युवाओं ने अपने अनुभव भी सभी के साथ सांझा किए। उन्होंने ऐसे वातावरण में रहने की खुशी ज़ाहिर की।



न्यूयॉर्क-मैनहट्टन। 'द फ्यूचर ऑफ पॉवर' कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में निज़ार जुमा, ब्र.कु. मोहिनी पंजाबी, डी.कला लेंगर, ज्यूडी रोगर्स, डॉ. अंजली ग़ोवर, अंजनी सेप्रासॉड, अश्विनी अम्बुरंजन, ब्रेडली एस. आरकिन, चन्द्रा सुखदेव तथा अन्य गणमान्य प्रतिभागी व अतिथि।



मेलबर्न-ऑस्ट्रेलिया। 'वैल्यू फॉर हैपी लिविंग' विषय पर सम्बोधित करने के पश्चात् समूह चित्र में वहाँ के भाई बहनों के साथ ब्र.कु. साधना, दिल्ली, किंग्सवै कैम।



ऑकलैण्ड-न्यूज़ीलैण्ड। 'हार्मनी इन रिलेशनशिप' विषय पर टॉक शो के पश्चात् वहाँ के भाई बहनों के साथ ब्र.कु. साधना।



शिकागो-अमेरिका। 'द फ्यूचर ऑफ पॉवर' कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में अल्का शर्मा, अनु बेहरी, चार्ली पोर्टिस, चिपो सी. न्याम्बुया, दीपक भवनानी, ध्रुव देसाई, बिष्णु फुयल, डॉ. बायरॉन सिगको, डॉ. मधु उप्पल, लता भवनानी, लॉरा ऑरटेगा, मैरी फ्रेडलैण्ड, राजेश्वरी चन्द्रशेखरणा, डी.कला लेंगर, निज़ार जुमा, नीतू गुप्ता, नितिन सिंघल तथा अन्य।



सिडनी-ऑस्ट्रेलिया। भारतीय मूल के परिवार के लोगों को 'ब्युटिफुल माइंड एंड इट्स पॉवर' विषय पर सम्बोधित करने के पश्चात् उनके साथ ब्र.कु. साधना।



मिलपिटस-सिलिकॉन वैली। दीपावली के अवसर पर मिलपिटस तथा साराटोगा शहर की ओर से प्रशस्ति पत्र तथा सर्टिफिकेट प्राप्त करते हुए ब्र.कु. कुसुम।

## अपने लक्ष्यों को जाँचे परखें

- ब्र.कु. प्रीति, आणंद

**जो** इंसान किसी चीज़ पर निशाना ही नहीं लगाता, वह चूकेगा क्या! छोटे लक्ष्य बनाना ही सबसे बड़ी गलती है। जीतने वाले लक्ष्य को देखते हैं, और हारने वाले रूकावटों को।

हमारे लक्ष्य इतने बड़े होने चाहिए कि हमें प्रेरणा दे सकें, मगर असलियत से इतनी दूर भी न हो कि हम निराशा हो जायें।

हम जो कुछ भी करते हैं, या तो हमें लक्ष्य के करीब ले जाता है या उससे दूर। हर लक्ष्य इन पैमानों पर तौला जाना चाहिए कि लक्ष्य कसौटी पर खरे तब नहीं उतरते जब...

1. अगर मेरा लक्ष्य सेहतमंद बनना हो, लेकिन जेब में पैसा न हो, तो यह बिल्कुल साफ है कि यह व्यवहारिक नहीं है। इसका मतलब यह है कि इसका तालमेल हमारे दूसरे लक्ष्यों के साथ नहीं है।

2. एक इंसान दुनिया में जितना चाहे धन कमा सकता है, लेकिन अगर वह अपने सेहत और परिवार को खो देता है, तो क्या उस धन की कोई कीमत है!

3. कोई व्यक्ति नशीली दवाएँ बेचकर करोड़ों रुपए कमा सकता है, लेकिन फिर उसे बाकी ज़िंदगी कानून से भागते हुए बितानी पड़ेगी। इस तरह का व्यवहार



गैरकानूनी है, सामाजिक ज़िम्मेदारी से परे और मन की शांति तथा ख्याति को छीनने वाला होगा।

बिना कर्म के लक्ष्य खोखले सपनों की तरह होते हैं। कर्म ही सपनों को लक्ष्यों में बदलता है। अगर हम अपना लक्ष्य नहीं भी हासिल कर पाते, तो इसका मतलब असफल होना नहीं होता।

देरी होने का मतलब हारना नहीं है, इसका मतलब यह है कि अपने लक्ष्य को पाने के लिए फिर से योजना बनाने की ज़रूरत है।

“जैसे एक कैमरे को तस्वीर लेने के लिए फोकस करना पड़ता है, वैसे ही हमें भी सफल जीवन पाने के लिए लक्ष्य बनाने की ज़रूरत पड़ती है। अपने ऊपर इस डर को कभी हावी न होने दें कि किसी काम को करने में कितना

समय लगेगा। वह समय किसी न किसी तरह बीत ही जायेगा, लेकिन हमें उस बीतने वाले समय का बेहतर से बेहतर उपयोग करने की कोशिश करनी चाहिए” - अर्ल नाइटिंगल।

हमारे लक्ष्यों और नैतिक मूल्यों के बीच तालमेल हो - लक्ष्य हमारे जीवन को अर्थ देते हैं। यह सफलता की ओर पहला कदम है। चाँद बनने का लक्ष्य बनाएँ। आप चूक भी गए तो एक तारा तो बन ही जायेंगे।

हेनरी फोर्ड कहते हैं - “बाधाएँ ऐसी डरावनी चीज़ें हैं, जो लक्ष्य से आँखें हटने पर आपको दिखती हैं”।

इस दुनिया में हम सभी के जीवन में एक उद्देश्य है, और यह हर इंसान का अलग-अलग हो सकता है। किसी ऑर्केस्ट्रा में अगर हर कोई

समय लगेगा। वह समय किसी न किसी तरह बीत ही जायेगा, लेकिन हमें उस बीतने वाले समय का बेहतर से बेहतर उपयोग करने की कोशिश करनी चाहिए” - अर्ल नाइटिंगल।

हमारे लक्ष्यों और नैतिक मूल्यों के बीच तालमेल हो - लक्ष्य हमारे जीवन को अर्थ देते हैं। यह सफलता की ओर पहला कदम है। चाँद बनने का लक्ष्य बनाएँ। आप चूक भी गए तो एक तारा तो बन ही जायेंगे।

हेनरी फोर्ड कहते हैं - “बाधाएँ ऐसी डरावनी चीज़ें हैं, जो लक्ष्य से आँखें हटने पर आपको दिखती हैं”।

इस दुनिया में हम सभी के जीवन में एक उद्देश्य है, और यह हर इंसान का अलग-अलग हो सकता है। किसी ऑर्केस्ट्रा में अगर हर कोई

एक ही बाजा बजा रहा है तो वह सुनने में शायद अच्छा नहीं लगेगा। छोटी योजनाएं न बनाएं, उनमें इंसान के दिलों में जोश भरने वाला जादू नहीं होता.....। बड़ी योजनाएं बनाएं, प्रतिज्ञा के साथ ऊँचाई की ओर बढ़ें और काम करें।

इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि हम कहां हैं? महत्व इसका है कि हम किस दिशा में जा रहे हैं। बिना किसी उद्देश्य के मेहनत और साहस भी बेकार होते हैं। चिंता गलत लक्ष्य बनाने की ओर ले जाती है। चिंतित आदमी उन बातों के बारे में सोचता रहता है जिन्हें वह घटित होते नहीं देखना चाहता। सक्रियता का मतलब उपलब्धि नहीं है।

अल्फ्रेड एमोंटपर्ट कहते हैं - “सक्रियता को

उपलब्धि मानने की भूल न करें। कठघोड़ा अपनी जगह पर लगातार चलता दिखता है, लेकिन आगे ज़रा भी नहीं बढ़ता”।

सक्रियता और उपलब्धि में बहुत फर्क है। एक फ्रांसीसी वैज्ञानिक कैब्रे ने इस बात को भेड़चाल वाले कैटरपिलर के साथ एक प्रयोग करके दिखाया। कैटरपिलर अपने सामने वाले की नकल करते हुए आँखें मूंदकर चलते हैं। कैब्रे ने उन्हें एक फूलदान के घेरे में इस तरह से रखा कि सबसे आगे वाला कैटरपिलर वास्तव में सबसे पीछे, कैटरपिलर के ठीक पीछे रहा। फिर उसने चीड़ के कांटे, जो कैटरपिलर का भोजन है, उस फूलदान के बीच में रख दिए। कैटरपिलर्स उस फूलदान में एक घेरे में ही घूमते रहे। आखिरकार घुमते हुए चक्कर लगाने के बाद वे थकान और भूख से भर गए, जबकि खाना उनसे कुछ ही इंच दूर था। हमें कैटरपिलर्स से सीख लेनी चाहिए। सिर्फ काम करते रहने का मतलब यह नहीं है कि आप कामयाबी की तरफ बढ़ रहे हैं। हर किसी को अपने काम को परखते रहना चाहिए ताकि, हमारी मेहनत का फल मिल सके।

एक आदमी अपनी पत्नी के साथ गाड़ी चला रहा था। पत्नी ने कहा, प्रिय, हम लोग गलत दिशा में जा रहे हैं। पति ने जवाब दिया, कौन परवाह करता है, हम बिफोर टाइम चल रहे हैं। अगर हम सिर्फ रफ्तार और काम करने को कामयाबी समझ बैठे तो हमारी गाड़ी तो बहुत अच्छी चलेगी, मगर हम कहीं पहुंचेंगे नहीं।

**निरर्थक लक्ष्य** - किसी किसान का एक कुत्ता सड़क के किनारे बैठकर आने वाली गाड़ियों का इंतज़ार करता रहता था। जैसे ही कोई गाड़ी आती, वह भौंकता हुआ उसके पीछे दौड़ता। एक दिन उसके पड़ोसी ने उस किसान से पूछा, क्या तुम्हें ऐसा लगता है कि तुम्हारा कुत्ता कभी किसी गाड़ी को पकड़ पाएगा? उस किसान ने जवाब दिया, सवाल यह नहीं है कि वह किसी गाड़ी को पकड़ पाएगा, बल्कि यह है कि अगर पकड़ पाएगा तो वह क्या करेगा?

बहुत से लोग उस कुत्ते की तरह निरर्थक लक्ष्यों के पीछे भागते रहते हैं। ●

एक आदमी अपनी पत्नी के साथ गाड़ी चला रहा था। पत्नी ने कहा, प्रिय, हम लोग गलत दिशा में जा रहे हैं। पति ने जवाब दिया, कौन परवाह करता है, हम बिफोर टाइम चल रहे हैं। अगर हम सिर्फ रफ्तार और काम करने को कामयाबी समझ बैठे तो हमारी गाड़ी तो बहुत अच्छी चलेगी, मगर हम कहीं पहुंचेंगे नहीं।

**निरर्थक लक्ष्य** - किसी किसान का एक कुत्ता सड़क के किनारे बैठकर आने वाली गाड़ियों का इंतज़ार करता रहता था। जैसे ही कोई गाड़ी आती, वह भौंकता हुआ उसके पीछे दौड़ता। एक दिन उसके पड़ोसी ने उस किसान से पूछा, क्या तुम्हें ऐसा लगता है कि तुम्हारा कुत्ता कभी किसी गाड़ी को पकड़ पाएगा? उस किसान ने जवाब दिया, सवाल यह नहीं है कि वह किसी गाड़ी को पकड़ पाएगा, बल्कि यह है कि अगर पकड़ पाएगा तो वह क्या करेगा?

बहुत से लोग उस कुत्ते की तरह निरर्थक लक्ष्यों के पीछे भागते रहते हैं। ●

एक आदमी अपनी पत्नी के साथ गाड़ी चला रहा था। पत्नी ने कहा, प्रिय, हम लोग गलत दिशा में जा रहे हैं। पति ने जवाब दिया, कौन परवाह करता है, हम बिफोर टाइम चल रहे हैं। अगर हम सिर्फ रफ्तार और काम करने को कामयाबी समझ बैठे तो हमारी गाड़ी तो बहुत अच्छी चलेगी, मगर हम कहीं पहुंचेंगे नहीं।

**निरर्थक लक्ष्य** - किसी किसान का एक कुत्ता सड़क के किनारे बैठकर आने वाली गाड़ियों का इंतज़ार करता रहता था। जैसे ही कोई गाड़ी आती, वह भौंकता हुआ उसके पीछे दौड़ता। एक दिन उसके पड़ोसी ने उस किसान से पूछा, क्या तुम्हें ऐसा लगता है कि तुम्हारा कुत्ता कभी किसी गाड़ी को पकड़ पाएगा? उस किसान ने जवाब दिया, सवाल यह नहीं है कि वह किसी गाड़ी को पकड़ पाएगा, बल्कि यह है कि अगर पकड़ पाएगा तो वह क्या करेगा?

बहुत से लोग उस कुत्ते की तरह निरर्थक लक्ष्यों के पीछे भागते रहते हैं। ●